ऊर्जा

समर्थ नारी गौरव

लीना शर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

ऊर्जा

लीना शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-01-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- लीना शर्मा 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY LEENA SHARMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

ऊर्जा

हम स्त्री हैं..... !

त्रिदेवों की समान शक्ति का एक युग शक्ति स्वरूपा स्त्री है, काया है, माया है, जननी है, जाया है, बेटी, पत्नी, भार्या, ईश्वरी शक्ति संपन्न जो धरती है, धरणी है, लक्ष्मी, दुर्गा, चामुंडा है यह सृष्टि के सृजन का साकार रूप है। सुंदरी, कांता, कामिनी, पत्नी, अर्धांगिनी असंख्य संवेदनाओं से सम्मानित व सभी नामों के अनगिनत गुणों से संदर्भों के अनुरूप गुणों को अपने व्यक्तित्व व कृतित्व में समाए, सम्मान से हर परिस्थिति में समझौता करती अविरल गति से टेढ़े मेढ़े रास्तों से गुजरते हुए मार्ग की समस्त अनुकूल, प्रतिकूल परिस्थितियों को हृदयंगम करने वाली असंभव शक्ति संपन्न, शक्ति रूप, व्यवहार आचरण है तो वह है स्त्री।।

"स्वामी विवेकानंद जी" ने एक बार कहा था... महिला शिक्षा और सशक्तिकरण दूसरों के हाथों में नहीं है। यह अधिकार महिलाओं में स्वाभाविक रूप से मौजूद है। आज की नारी परामुखी नहीं, आत्मनिर्भर स्वावलंबी है। लैंगिक भेदभाव करना अमानवीय है। देश काल और समाज की बनाई समस्याओं की नारी स्वयं समाधान है। हर परिस्थिति का डटकर सामना करने वाली स्त्रीशक्ति में मान, ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान चूल्हे चौके से लेकर आकाश में उड़ने व उड़ान भरने जैसे अदम्य जोखिम कार्यों में भी वह नहीं चूकी है। आज कौन सा क्षेत्र शेष है, जहाँ नारी ने अपना परचम नहीं लहराया। जल, थल, वायु, सैन्य, शक्ति, राजनीतिक क्षमता बहुत से क्षेत्र इसी नारी को समर्पित है। घर हो या किंडर गार्डन विद्यालय बालकों का प्रारंभिक शैक्षिक क्षेत्र इसी नारी को समर्पित है।

वैदिक काल में...

यत्र तु नार्य: पूज्यन्ते तत्र देवता: रमन्ते,

यत्र तु एता: न पूज्यन्ते तत्र सर्वा: क्रिया: अफला:

माना जाता था। वैदिक काल में नारी को वेदों के पठन-पाठन का पूर्ण अधिकार था। नारी को वैदिक कार्य प्रणाली में पुरुषों का सहयोग करने की पूरी छूट थी। मध्यकाल मुगलों के आगमन के बाद नारी के अधिकारों को अवश्य सीमित किया। पर्दे के आवरण का सामना भी उसे तभी करना पड़ा। बावजूद उसके नारी ने हार नहीं मानी।

समस्याएं और सोच.....

कई जडवत समस्याएं है... जो कि नारी को अंदर से खोखला जरूर करके देती हैं। परंतु फिर भी वह विपरीत परिस्थितियों और अपनी समस्याओं से जूझती रहती है। और उन्हें संभालने या फिर उसे निकलने का भरसक प्रयत्न करती है।

एक बात और है कि समय कितना भी बदल जाए, लेकिन भारतवर्ष में प्राचीन जडवत समस्या, मान्यताओं को तोड़ना मुश्किल ही नहीं असंभव सा है। आदिवासी पिछड़े क्षेत्रों में लड़कियों का बाल विवाह करा दिया जाता है। बच्ची यह भी नहीं जानती कि विवाह का अर्थ क्या होता है, किसके साथ उसका विवाह हो रहा है। पशुओं की तरह एक खूंटे से दूसरे खूंटे पर उसे बांध दिया जाता है, जैसे कि वह एक पशु है। कई स्थानों पर और भी घिनौना रूप सामने आता है, जैसे... अत्याधिक पिछड़े क्षेत्रों में लड़कियों की खरीद-फरोख्त के लिए पैंठ भी लगाई जाती है। लड़कियाँ बेची जाती है और माता-पिता को अच्छा पैसा मिलता है। बिना कुछ सोचे समझे पैसे के लालच में बिटिया को बेच देते हैं। बेटी को तो बस यह पता होता है कि उसकी माँ का विवाह भी इसी प्रकार हुआ था।

एक और विकट समस्या.... भारतीय परिपेक्ष्य में प्रत्यक्ष समस्या पुत्र प्राप्ति की,,, क्योंकि पुत्र ही तो मोक्ष प्राप्ति का माध्यम है सच कहूँ तो लिखते हुए भी इस घिनौनी प्रथा पर हंसी आती है। मगर हाँ यह भी एक घृणित मानसिकता है। आज हमारे समाज का प्रत्यक्ष दर्पण यही है। छोटी मानसिकता भ्रूण हत्या जैसी अमानवीय कृत्यों को बढ़ावा देती है। जन्म से पूर्व ही कन्या को गर्भ में मार दिया जाता है क्यों,,, क्योंकि वह एक स्त्री है। परिणाम स्वरूप लड़की के जन्म से पूरे परिवार में लड़के, लड़की का भेद शुरू हो जाता है। लड़के को लड़की से विशेष महत्व दिया जाता है। रसोई घर में खाना बनाते वक्त माँ यह जरूर पूछती है "म्हारे लाडेसर" क्या खाएगा खाने में,,,,,

यही भेदभाव आगे चलकर दोनों की परवरिश के साथ उनको योग्यता दिलाने में भी दिखाई देता है। लड़की की शिक्षा उसी के ऊपर छोड़ दी जाती है। परंतु लड़के के

लिए माता-पिता लोन लेते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो अपनी जमीन तक गिरवी रख देते हैं। अभिभावकों के पास लड़कियों के लिए तर्क होता है कि बेटी की शादी करनी है दान, दहेज देना है... दूसरी तरफ लड़के वाले भी दहेज के लिए मूँह बाए खड़े रहते हैं। कहने में आता है, आपकी बिटिया को जिस चीज़ का शौक है तो आप खुद ही दीजिए वरना उसे परेशानी होगी। जिन बेटियों के माता पिता पूंजीपति है वो तो दहेज देने को ही अपनी शान शौकत, सामाजिक प्रतिष्ठा समझते हैं। आजादी के सत्तर साल बाद भी कहा जाता है कि

"जितना गुड डालोगे मीठा उतना ही मिलेगा"

लड़का देखने से पहले अपनी जेब देख लो।

लाख कानून बन गए हों, परंतु दहेज प्रथा आज भी यथावत है। आज आजादी के सत्तर साल के बाद भी भारत

देश में नारी दिवस मनानें, नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता पड़ रही है आखिर क्यों?

क्योंकि नारी ने अपनी और अपने जीवन की कदर नहीं जानी, वह अपना पूरा जीवन घर परिवार और देश को समृद्धीशाली बनाने में बिता देती है। अपने अधिकारों और कार्यक्षेत्र के बारे में कभी सोचती ही नहीं। उसमें कर्तव्य का निर्वहन तो बखूबी करती है। बावजूद इसके वह कभी भी अपने अधिकारों को जानने की इच्छा ही नहीं रख रखती और ना ही जानने के बाद कभी संघर्ष करने की चाह रखती है।

हाँ,,, अब एक और बात निकल कर सामने आती है "समान कार्य समान अधिकार के लिए" छोटा सा उदाहरण है कि वर्तमान में महिला-पुरुष दोनों श्रमिक का कार्य करते हैं। लेकिन महिला को पारिश्रमिक पुरुष से कम दिया जाता है, क्योंकि वह दुर्बल है अशक्त है।

ग्रामीण क्षेत्र में लोक कलाकारों में विशेष योग्यताएँ भरी पड़ी है। जो आज लगभग विलुप्त होने की कगार पर है। लेकिन उन कलाओं को बाहर लाना, आवश्यकता अनुरूप सुविधाएं प्रदान करना बड़ी टेढ़ी खीर है। यदि कोई आगे बढ़कर सहयोग देता है तो वह किसी न किसी रूप में अपना लाभ लेने की अपेक्षा रखता है। जिस कारण प्रत्येक व्यक्ति का महिला विश्वास नहीं कर पाती। इस प्रकार के सहयोगी भी महिलाओं के साथ उपेक्षित व अनुचित व्यवहार करते हैं।

विशेष क्षेत्र आदिवासी इलाकों में लड़कियों को नौकरी दिलवाने के बहाने शहरों में जाकर उनसे देह व्यापार और अन्यअनुचित कार्य भी कराए जाते हैं। परन्तु आज भारतवर्ष में भी नारी जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं। "नारी समाज का दर्पण है"

समाधान...

किसी देश की उत्थान, प्रगति, समृद्धि उस स्थान में महिलाओं की स्थिति से भी अवगत कराती है। एक बात तो तय है कि...

"नारी स्वयं जलकर जग को रोशन करती है"

पिछले कुछ समय में समाज की सोच में आमूलचूल परिवर्तन आया है। नारी पढ़ रही है, आगे बढ़ रही है। लेकिन आज भी लोग सच्चाई से मुँह मोड लेते हैं। लड़की को चूल्हे चौके तक ही सीमित रखना चाहते हैं। ऐसे में नारी उत्थान के लिए संभवतः प्रयास करने होंगे।

"चित्र में रंग भरने के लिए केवल कैनवास की आवश्यकता होती है विशेष सुविधाओं की नहीं" आज़ादी के बाद नारी शिक्षा, समानता एवं उनके विकास के लिए योजनाएं बनाई गई तो है यह केवल

"ऊँट के मुँह में जीरे के समान है"

देश के बड़े तबके में रूढ़िवादी सोच ने कब्जा कर रखा है ऐसे लोगों के लिए बेटी का जन्म खुशी की बात नहीं बल्कि शर्म का विषय बन जाता है। वर्तमान में आवश्यक है, समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाना।

हाँ एक बात और,,,, क्योंकि प्रत्येक स्त्री से पुरुष का कोई ना कोई संबंध है। बगैर स्त्री के पुरुष का भी अस्तित्व नहीं, पुरुष भी अपूर्ण है। जब तक मनु को ब्रह्मा का समर्पण नहीं मिला वह सृष्टि का निर्माण नहीं कर पाए।

इस बात को भी सहमति देनी होगी की समाज और सरकार दोनों को ही नारी शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। पिछड़े से पिछड़े वर्ग और क्षेत्रों तक योजना, परियोजना और सुविधाओं को पहुँचाना होगा। जिससे साधारण महिला वर्ग इन सभी परियोजनाओं से लाभान्वित हो सके।

नारीशक्ति को सृजन की विशेष शक्ति परमात्मा ने केवल सृष्टि में नारी को ही प्रदान की है। नारी शक्ति खुले आकाश में आत्मविश्वास भर विचरण कर रही है। "गाँधी जी का कथन है कि".... महिला और पुरुष दोनों को अपने अपने कार्य पर गर्व होना चाहिए तथा दोनों को अपने कार्य क्षेत्र को विशिष्टता और पूर्ण मनोयोग से पूर्ण करना चाहिए। महिलाएं आत्मनिर्भर व स्वतंत्र है। इतिहास साक्षी है कि उसने अपने सही अधिकार पाने के लिए संघर्ष किया और अपने जीवन में सफलता हासिल की। महिलाओं के अधिकारों को रक्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयास किए जा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का जन्म 8 मार्च 1908 को हुआ। न्यूयॉर्क की महिलाओं ने सड़क पर अपने अधिकार को पाने के लिए प्रदर्शन किया। काम के कम घंटे, बेहतर वेतन, मतदान का अधिकार उनकी माँग थी। शिक्षा में पुरुषों

जैसा समान व्यवहार भी महिला शक्ति पाना चाहती थी। इसी के पश्चात आम बजट में महिला सशक्तिकरण से जुड़े प्रावधान भी किए गए। उल्लेखनीय है कि महिलाएँ नाइट शिफ्ट समेत किसी भी शिफ्ट में काम कर सकती है। इसके लिए सुरक्षा संबंधी खास कदम उठाए गए।

लद्दाख में महिलाओं का समूह एलपीजी गैस प्लांट चलाकर सुनिश्चित करती हैं कि चीनी सेना पर नजर रखने वाले 50,000 भारतीय सैनिकों को ठंड में खाली पेट ताल न करनी पड़े। सरकार छोटे स्टार्ट अप देकर नारी सशक्तिकरण का उदहारण प्रस्तुत कर रही है।

महिला शक्ति की सराहना करनी चाहिए क्योंकि सिर्फ सीमा पर जाकर चुनाव जीतने का काम ही नहीं करती बल्कि आतंकवाद से निपटने के लिए हथियार भी उठा सकती है। हर परिस्थिति का सामना करने में सक्षम

है। वर्तमान में "प्रसाद जी" की पंक्तियाँ स्मरण हो जाती है .....

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो"....,

"विश्वास रजत नग पग तल में"...

आज नारी उत्थान का युग है। महिलाओं ने अपनी शक्ति और धैर्य के दम से प्रतिबंधित स्थानों जैसे..... मंदिर, मस्जिद में भी अपना प्रवेश दर्ज करा पाई है। जो उसने ठानी है वह करती हैं। भले ही उसकी प्राप्ति के लिए कितना ही संघर्ष क्यों ना करना पड़े।

अंततः यही कह सकते हैं कि यह पंक्ति नारी पर चरितार्थ भी है।

सुनो!!
तुमने अपने ही तरीके से
मेरी बुद्धिमत्ता का,
आकलन कर
मुझे प्रमाण पत्र दे तो दिया

पर क्या? तुम मेरी,
"दबी हुई"
आवाज को... सही से सुन पाए थे
क्योंकि,
बहरों को सुनाने के लिए
तीव्र ध्वनि, "कोलाहल" की
आवश्यकता होती है,
ये तो....
जानती हूँ मैं।
हाँ मैं... रिसर्च, संवाद सृजन में
यकीन रखती हूँ,
इसीलिए सुन पाती हूँ
धैर्य धर, बगैर शोर... तुम्हारी आवाज
क्योंकि...
नया सोचने और करने के लिए
शांत मन की....
आवश्यकता होती है
बंधे हाथों,पांवों की नहीं
हाँ..... मुझे गर्व है, मैं स्त्री हूँ
आशा और ऊर्जा से भरी।।

लीना शर्मा

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

लीना शर्मा

ऊर्जा

सुनो!!
तुमने अपने ही तरीके से
मेरी बुध्दिमत्ता का,
आकलन कर
मुझे प्रमाण पत्र दे तो दिया

पर क्या? तुम मेरी,
'दबी हुई'
आवाज को...सही से सुन पाए थे

क्योंकि,
बहरों को सुनाने के लिए
तीव्र ध्वनि, 'कोलाहल' की
आवश्यकता होती है,
ये तो .....
जानती हूँ मैं।

हाँ मैं....रिसर्च, संवाद सृजन में
यकीन रखती हूं,
इसीलिए सुन पाती हूं
धैर्य धर, बगैर शोर....तुम्हारी आवाज

क्योंकि...
नया सोचने और करने के लिए
शांत मन की....
आवश्यकता होती है
बंधे हाथों,पांवों की नहीं
हाँ.....मुझे गर्व है, मैं स्त्री हूं;
आशा और ऊर्जा से भरी।।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शाब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-93-90995-01-1